हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र नवम्बर–2019

पेपर 2+4 हिन्दी अंक–40

समय–1 घण्टा

(Reading a passage & conversation.)

भारत एक विशाल देश है। इसमें अनेक धर्मों, संप्रदायों, वर्गो, जातियों उपजातियों, संस्कृतियों के लोग रहते है। इसी कारण भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है। भारत के विषय में प्रसिद्ध कहावत है– कोस–कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी। इतनी अनेकताएँ होने पर भी भारत एक सूत्र में बँधा हुआ है। हम भारतीय कितने हजारों सालों से एक परिवार की तहर ही रहते आए हैं। हमारे पुराण, उपनिषद, रामायण तथा महाभारत जैसे सम्मानित ग्रंथ हैं। प्रत्येक भाषा में इसकीं कथाएँ उपलब्ध हैं। भाषा की दीवार होते हुए भी भारत एक है और सभी भारतीय एक ही धर्म के अनुयायी हैं। भारत में धर्म, भाषा, प्रांत, रंग, रूप, खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार यहाँ तक कि जलवायु में भी विभिन्नता है। देश में बाहरी और ऊपरी एकता होते हुए भी मानो भीतर सभी अपने–अपने स्वार्थ का झंडा लिए खड़े हों। कई बार ये स्थिति बड़ी खतरनाक भी साबित होती है। एक ही भारतदेश में रहने वाले हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न धर्मों के लोग एक ही भारत माता के लाल हैं, आपस में भाई–भाई हैं।

मजहब नहीं सिखाता, आपस में वैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।।

धर्म या मजहब तो आपस में लोगों को जोड़ता है। प्रत्येक मजहब के पैगम्बर या धर्म–स्थापक की शिक्षाएँ उसके अनुयाइयों को मानवीय प्रेम का पाठ पढ़ाती है। गीता, कुरान, गुरूग्रंथ, बाइबिल तथा धम्मपद आदि विभिन्न धर्मों के शास्त्रों में शान्ति एवं प्रेम से जीवन जीने की शिक्षाएँ दी गई हैं। हर मजहब यही कहता है कि हम स्वयं भी सुख से जिएँ और दूसरों को भी सुख से जीने दें। कभी किसी को हानि या कष्ट नहीं पहुँचायें–सभी को जीने की स्वतन्त्रता का अधिकार प्रदान करे।

संसार में अनेकों धर्म (मज़हब), संप्रदाय (फ़िरके) और पंथ प्रचलित हैं किन्तु कोई भी धर्म एक–दूसरे से ईर्ष्या, द्वेष या वैर भाव रखने का उपदेश नहीं देता। प्रत्येक धर्म आपसी भाईचारे और मेल–मिलाप बनाये रखने का उपदेश देता है। धर्म या मजहब कोई कच्चा धागा नहीं है जो तनिक झटके से टूट जाए बल्कि यह तो इतना पवित्र और महान् है कि इसके स्पर्श मात्र से अपवित्र भी पवित्र बन जाता है। धर्म मनुष्य को ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग बताता है और ईश्वर एक है इस तथ्य से कौन इन्कार कर सकता है। मार्ग अलग–अलग हो सकते हैं उनके नाम भी भिन्न हो सकते हैं किन्तु मंजिल तो सब की एक ही है।

मूलतः सभी धर्मो का प्रादूर्भाव लोगों में एकता की भावना को बढ़ाने के लिए ही हुआ है। लोगों के बीच अगर एकता एवं सामंजस्य न हो तो वे किसी एक धर्म विशेष को नहीं अपना सकते। सभी धर्मों की स्थापना के पीछे एक प्रकार की जीवनशैली एवं वैचारिक सामंजस्य ही होता है जो सामूहिक एकता के रूप में प्रखर होकर समाज की स्थापना करते हैं। समाज में एकता को बनाए रखने मे धर्म अहम भूमिका निभाता है। धर्मपरायणता का पालन किसी भी समाज के विकास एवं उसके नागरिकों के कल्याण के लिए अनिवार्य है।

जहां हिंदू धर्म "सर्वधर्म समभाव" एवं "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना से प्रेरित है वहीं इस्लाम, "मजहब नहीं सिखता आपस में बैर रखना" का संदेश देता है। भारत विश्व में धार्मिक विविधता के बावजूद कौमी एकता का अनूठा उदाहरण पेश करता है। भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है

और यहां कि कुल जनसंख्या विभिन्न धर्मों के लोगों से मिलकर बनी है। इसके बावजूद यहां राष्ट्रधर्म ही सर्वोपरि है और भारत के संविधान में सभी धर्मो के लोगों को अपने–अपने धर्मों से संबंधित पद्धतियों के पालन की स्वतंत्रता है और संकट की स्थिति में राष्ट्रहित में सभी धर्मों के लोग यहां एकजुट हो जाते हैं। विश्व के धर्म प्रधान देशों, जिनमें से कुछ देशों में तो धार्मिक कट्टरवाद अपने चरम पर पहुंच चुका है, को भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। उन्हें भारत से इस बात की प्रेरणा लेनी चाहिए की किस तहर यहां विभिन्न धर्मों के लोग राष्ट्रधर्म की भावना के साथ एकता के सूत्र में बंध कर एक साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं और पूरे विश्व को कौमी एकता का संदेश देते हैं।

इस पृथ्वी पर जितने भी प्राणी रहते हैं–सबका अपना–अपना धर्म है और सबको अपने–अपने धर्म के अनुसार जीवन जीने की स्वतन्त्रता है। हमारे देश के संविधान में सभी मजहबों को आदर की दृष्टि से देखा गया है। भारत के संविधान के अनुसार किसी के मजहब को बुरा–भला कहना या मजहब पर चोट करना अन्याय है। यह कानूनन जुर्म भी है।

कोई भी मज़हब, धर्म किसी को उल्टी राह पर चलने के लिए नहीं कहता। सभी धर्म आपसी प्रेम प्यार, भाईचारे का संदेश देते हैं। अतः धर्म और मज़हब के नाम पर वैर भावना भड़कने वालों से होशियार रह कर हमें साम्प्रदायिक सद्भावना जागृत करनी चाहिए तभी हमारे देश में सुख शान्ति होगी तभी हम उन्नति और विकास के मार्ग पर चलते हुए दुनिया से टक्कर ले सकते है।

स्वयं स्वार्थ की नीति छोड़कर देशहित की बातें करनी चाहिए। देश को सूत्र में बाँधे रखने के लिए सबको मिलकार रहना होगा। देश में एकता रहेगी तभी देश तरक्की कर सकता है, आगे बढ़ सकता है। इसके लिए प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है।

आध्यात्मिक दृष्टि से यदि देखा जाए तो मनुष्यों के शरीर या जिस्म अलग–अलग प्रकार के हैं। लेकिन उनकी रूह या आत्मा एक जैसी (ज्योतिस्वरूप) ही है। शरीर नाशवान है जबकि मनुष्य की आत्मा अमर है। आत्मिक दृष्टि ही सच्ची दृष्टि है। आत्मिक रिश्ते से सब आत्माएँ आपस में भाई–भाई हैं इसलिए धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर या सम्प्रदाय के नाम पर आपस में लड़ना–झगड़ना अज्ञानता की निशानी है।

***